महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

की पी-एच.डी. [हिन्दी] उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबंध

“मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध एक अध्ययन”

***

*****

****

****

शोध-छात्रा

हेम लता

***

*****

****

****

शोध-निर्देशक

डॉ० दीपेन्द्रसिंह जाडेजा

प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा (गुजरात)

२०२२

अनुक्रमणिका

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध एक अध्ययन

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय

1.मैत्रेयी पुष्पा व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 मैत्रेयी पुष्पा का व्यक्तित्व निर्माण

1.2 मैत्रेयी पुष्पा का साहित्य संसार

1.3 सम्मान एवं पुरस्कार ।

द्वितीय अध्याय

2.मूल्य बोध अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

2.1 मूल्य शब्द का अर्थ, परिभाषा

2.2 मूल्य का स्वरूप

2.3 मूल्य : समानार्थी शब्द

2.4 मूल्य विभिन्न शास्त्रों की दृष्टि से

2.4.1 समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

2.4.2 अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोण

2.4.3 मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

2.4.4 दार्शनिक दृष्टिकोण

2.5 मूल्य का विभाजन

2.6 मूल्य विघटन का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

2.7 मूल्य विघटन के प्रमुख कारण एवं दिशाएं

2.8 मूल्य और साहित्य

2.9 मूल्य का महत्व एवं प्रासंगिकता

तृतीय अध्याय

3.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का सामाजिक पक्ष

3.1 वैयक्तिक मूल्य

3.2 दांपत्यगत मूल्य

3.3 पारिवारिक मूल्य

3.4 परंपरागत मूल्य

3.5 नारी जीवन से संबंधित नई मान्यताएं।

चतुर्थ अध्याय

4.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का आर्थिक पक्ष

4.1 अर्थ की जीवन में प्रधानता

4.2 आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी

4.3 आर्थिक शोषण

4.4 आर्थिक संघर्षों का यथार्थ

4.5 बढ़ती व्यवसायिक मनोवृति

4.6 चोरी, डकैती और लूट।

पंचम अध्याय

5.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का राजनीतिक पक्ष

5.1 पुलिस प्रशासन की क्रूरता

5.2 चिकित्सा क्षेत्र में भ्रष्टाचार

5.3 राजनीति में चुनावी संघर्ष

5.4 धोखाधड़ी

5.6 बेरोज़गारी।

षष्ठम अध्याय

6.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष

6.1 धार्मिक मूल्य बोध

6.1.1 धार्मिक आस्था

6.1.2 सेवाभाव को धर्म समझना

6.1.3 धर्म में अंधविश्वास

6.2सांस्कृतिक मूल्य बोध

6.2.1 लोकगीत

6.2.2 परंपरागत सांस्कृतिक मूल्य।

सप्तम् अध्याय

7.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में भाषा-शैली।

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रकाशित शोध पत्र

1.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में नारी संघर्ष।

2.शैलेंद्र सागर के कहानी संग्रह 'ब्रंच तथा अन्य कहानियां' में मूल्य बोध का सामाजिक पक्ष।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध

एक अध्ययन

प्राक्कथन :-

' मूल्य ' बीसवीं शती का एक चर्चित शब्द माना गया है। मूल्यों का विकास समाज के साथ हुआ है। इसे समाज में व्यक्ति की सांस्कृतिक धरोहर स्वीकारा गया है। जिसके आधार पर समाज में प्रत्येक क्रिया-कलाप और व्यवहार होता है। मूल्य मानवीय व्यवहार का नियमन करने वाले ऐसे उच्च आदर्श हैं, जिसकी अवधारणा युग और समाज की स्थितियों के अनुसार परिवर्तित होती चलती है। यह मनुष्य को श्रेष्ठ से श्रेष्ठत्व बनाने का प्रयास है।

मूल्य समाज का आदर्शात्मक प्रतिबिंब है जो मनुष्य को शिष्टाचार बनाते हैं। मूल्य का स्वरूप प्राचीन समय से ही हमारे समाज में व्याप्त रहा है परंतु साधारण मानव इससे परिचित नहीं था। जैसे जैसे व्यक्ति विकसित होता गया वह मूल्य को समझने लगा और धीरे-धीरे मूल्य एक पूर्ण विकास का रूप धारण कर गए। मूल्यों के बिना व्यक्ति का समाज में कोई अस्तित्व नहीं है। मूल्य समाज में मनुष्य की पहचान बनाने में सहायता करता है। मूल्य मनुष्य को समाज के नियमों के बारे में जागरूक करते हैं। समाज में रहते हुए मनुष्य परस्पर प्रेम-भावना, आचार व्यवहार जैसे मूल्यों का प्रयोग करता है। मूल्य मानवीय जीवन को आधार प्रदान करता है। जिसके लिए व्यक्ति और समाज जीवित रहता है तथा ज़रूरत के समय संघर्ष को भी तैयार रहता है। प्रत्येक समाज में कुछ मान्यताएं वह धारणाएं विद्यमान होती हैं। उसमें समय के अनुसार यही मान्यताएं मूल्य बन जाती हैं। अत: मूल्य मानवीय जीवन में विशेष महत्व रखते हैं। हिंदी नवगीतों में भी मूल्य बोध का अध्ययन किया है। इसके अतिरिक्त अलका सरावगी के कथा साहित्य में मूल्य बोध शोध प्रबंध लिखा गया है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास साहित्य में मूल्य संबंधित सामग्री का अंकन किया है।

मैत्रेयी पुष्पा का जन्म 30 नवंबर 1944 ई. में अलीगढ़ जिले के सिर्कुरा गांव में (उत्तर प्रदेश)विपन्न

और निम्न मध्यवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनका अपना जीवन व्यक्तित्व और रचना संसार है। सराहनीय कार्य के लिए कई सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हुए हैं । मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में अगर मूल्य बोध की चर्चा करें तो नकारात्मक तथा सकारात्मक दोनों पक्षों का अध्ययन मिलता है। इनके उपन्यासों का परिवेश शहरी तथा ग्रामीण दोनों तरह का मिलता है। इनके उपन्यासों में मूल्य विकास तथा मूल्य विघटन के दोनों तरह के तथ्यों का अध्ययन हुआ है। पात्र अपने जीवन में मूल्यों का निर्वाह करते देखे जा सकते हैं। नारी जीवन से संबंधित नई मान्यताओं का भी वर्णन किया गया है। समाज में मूल्य परिवर्तन को दर्शाया है। विचारधाराओं में बदलाव आ रहा है। मानसिक प्रवृत्तियों में टूटनशीलता को दिखाया है। लेखिका ने अपने उपन्यासों में जीवन की वास्तविकता को इतनी कुशलता से प्रस्तुत किया है कि उनके उपन्यासों के पात्रों को मस्तिष्क से निकाल पाना कठिन है। इनके उपन्यास के पात्र तथा घटनाएं मूल्य बोध करवाती हैं। मूल्य बोध का अध्ययन कर अपने उद्देश्य को प्राप्त करना है। शोध प्रबंध की सीमाओं में रहकर पूर्ण करने की संभवत कोशिश की गई है।

समाज में मानवीय मूल्यों का वर्णन हो या नारी से संबंधित स्थिति की चर्चा हो, इन सब पर पुष्पा जी ने कलम की तूलिका से ऐसे शब्द चित्र खींचे हैं जो हमारे सामने एक दृश्य खड़ा कर जाते हैं। इनकी कथा में कहीं अनपढ़ समाज की पृष्ठभूमि है तो कहीं शिक्षक समाज की। दोनों समाजों में कहीं पर मूल्यों का वहन हुआ है तो कहीं पर मूल्यों का विघटन। इनके उपन्यासों में किसी एक मूल्य की चर्चा नहीं हुई है बल्कि विभिन्न मूल्यों की चर्चा मिलती है। मूल्यों के चित्रण के साथ-साथ विभिन्न पात्रों के विभिन्न मूल्यों में परिवर्तन भी दर्शाया गया है। यह मूल्य परिवर्तन एक आदर्श स्थिति का चित्रण है। जीवन के लिए कौन से मूल्य अधिक उपयोगी हैं? फिर समाज में संतुलन की स्थिति बनाए रखने के लिए किन मूल्यों को पहल देनी चाहिए? इसका आभास मूल्य परिवर्तन की स्थिति से हो जाता है। ऐसे में मेरा प्रस्तावित शोध कार्य इस दिशा में पहल है। मूल्य बोध के संदर्भ में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य को प्रमुख रखा गया है। इनका प्रत्येक उपन्यास आरंभ से लेकर अंत तक मूल्यों को व्यक्त करता है। उल्लेखनीय बात यह है कि कम समय में इतना लिखने के बाद भी इनकी प्रत्येक कृति ने पाठकों को आश्वस्त किया है। अपेक्षाकृत कम समय में इतने अधिक लेखन के पीछे इस तथ्य को आसानी से समझा जा सकता है कि मैत्रेयी पुष्पा के पास अनुभव का व्यापक संसार

है। इस अनुभव के संसार में वह स्वयं भी है और उनके आसपास की पूरी दुनिया भी कथानक का विषय बनता गया। जैसे हम आगे चर्चा करेंगे कि इनके उपन्यासों की कथाभूमि ग्रामीण तथा शहरी दोनों तरह की है जैसे 'विज़न' उपन्यास एक शहरी वातावरण का उपन्यास है। इनके उपन्यासों की ग्रामीण भूमि जानी पहचानी ही नहीं बल्कि उनके संवेदना में रची बसी है, इसीलिए वह पूरी निजता एवं प्रमाणिकता के साथ इस समय को अर्थात समाज को अंतरंगता और संपूर्ण परित्यक्ता में देखने में समर्थ है। इसी विषय में कृष्ण बिहारी पांडे ने लिखा है- 'मैत्रेयी पुष्पा के यहां गांव न तो 'अहा' का मिथ धारण किये हैं, न वे किसी फिल्मी दृश्य की तरह कुछ ग्रामीण चीज़ों के संकलन और सरलीकरण है। मैत्रेयी पुष्पा ने यहां स्पंदित जीवन को पूरी जटिलताओं एवं विविधताओं में यथार्थ दृष्टि से देखा है। परंपरा और परिवर्तन के टकराव को उनकी सूक्ष्म नज़र विशदता के साथ देखती है। इस क्षेत्र में वह समकालीन महिला कथाकारों से भिन्न हैं। जहां अधिकतर लेखिकाओं ने कथा साहित्य में नगरीय मध्यम वर्ग के जीवन का यथार्थ चित्रित है, क्योंकि उनके अनुभवों की संपृकित उसी समाज से है। वही मैत्रेयी पुष्पा ने व्यापक ग्रामीण समाज के भीतर जीवन को इस तरह विस्तृत किया है, जिसमें पूरा समाजशास्त्र निहित है। इस प्रकार आगे हम शोध विषय की सामग्री एकत्रित करने के लिए लेखिका के उपन्यास साहित्य की संक्षिप्त चर्चा करेंगे। उपन्यासों को क्रमवार वर्णित करते हुए इनके नामों को उल्लेखित करना आवश्यक माना है। जिसका वर्णन इस प्रकार है:-

1.बेतवा बहती रही (1993)

2.इदन्नमम (1994)

3.चाक (1997)

4.झूलानट (1999)

5.अल्माकबूतरी (2000)

6.अगनपाखी (2001)

7.विज़न (2002)

8.कही ईसुरी फाग (2004)

9.त्रियाहट (2005)

10.गुनाह बेगुनाह (2011)

11.फ़रिश्ते निकले (2014)

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास साहित्य के लेखन की शुरुआत 90 के दशक में की। इन्होंने हिंदी साहित्य में अपना विशेष स्थान बनाया है। नारी दशा तक इनका साहित्य सीमित नहीं है। लेखिका ने भारतीय समाज मानस में हो रहे बदलावों का सूक्ष्म अध्ययनपूर्ण चित्रण सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक क्षेत्रों की घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में अपने कथा साहित्य में प्रस्तुत करती हैं। मैत्रेयी पुष्पा के ग्यारह उपन्यासों को आधार बनाकर शोध प्रबंध को सात अध्यायों में विभाजित किया है। इन्हीं को आधार बनाकर **"मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध एक अध्ययन"** शीर्षक का शोध कार्य किया गया है। इस शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय का शीर्षक है **'मैत्रेयी पुष्पा व्यक्तित्व एवं कृतित्व।'** इसमें लेखिका के जीवन एवं व्यक्तित्व का परिचय प्रस्तुत किया गया है। जिसमें इनके वंश परंपरा, जन्म एवं प्रारंभिक जीवन, शिक्षा, परिवार, प्रेरणा स्रोत, साहित्यिक वातावरण और युगीन परिवेश एवं कार्य क्षेत्र के आधार पर किया गया है। इसके साथ ही इनके रचना संसार, सम्मान व पुरस्कार का भी विस्तृत विवेचन है। इनकी रचनाओं के कथ्य का परिचय दिया है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत **'मूल्य बोध का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप'** का वर्णन किया गया है। जिसमें मूल्य बोध के अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप, मूल्य के समानार्थी शब्द, मूल्य विभिन्न शास्त्रों की दृष्टि से वर्णित किया है। मूल्य का विभाजन, मूल्य विघटन का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप, कारण एवं दिशाओं का अध्ययन किया गया है। अंत में मूल्य और साहित्य के संबंध तथा मूल्य के महत्व एवं प्रासंगिकता पर विचार किया गया है।

तृतीय अध्याय में **'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का सामाजिक पक्ष'** का वर्णन किया गया है। मूल्य बोध के सामाजिक पक्ष को पांच वर्गों में विभाजित किया है। पहले वर्ग में वैयक्तिक मूल्य के अंतर्गत आत्मसयंम, स्वाभिमान जैसे गुणों की चर्चा की गई है। समानता, भाई-चारा, प्रेम-समर्पण आदि पर प्रकाश डाला है। दांपत्यगत मूल्य में अर्थात दूसरे वर्ग में पति-पत्नी के अटूट संबंधों तथा इसके विपरीत पति-पत्नी संबंधों में आ रही दरार के कारण टूटते संबंधों को भी दिखाया गया है। तृतीय वर्ग में पारिवारिक मूल्यों पर चर्चा हुई है कि किस तरह परिवार के सदस्य गांव में अपने माता-पिता तथा ज़मीन को अनदेखा करते हैं। चतुर्थ वर्ग में परंपरागत मूल्यों का वर्णन

किया गया है। इसमें बताया गया है कि यह परंपरागत मूल्य ही हैं जो कि व्यक्ति को संस्कारवान बनाते हैं। परंपरागत मूल्य मनुष्य को समाज और संस्कृति से संबंधित रखते हैं। पंचम वर्ग में नारी से जुड़ी संबंधित नई मान्यताएं रखी गई हैं। इसमें नारी के बदलते हुए दृष्टिकोण को व्यक्त किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में **'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास में मूल्य बोध का आर्थिक पक्ष'** को वर्णित किया गया है। इसके अंतर्गत छः वर्गों को रखा गया है। जिसमें व्यक्ति के जीवन में पैसे की प्रधानता को व्यक्त किया गया है। दूसरे वर्ग में अर्थ से आत्मनिर्भर नारी के व्यक्तित्व को दिखाया है। एक आत्मनिर्भर नारी के आर्थिक मूल्य को वर्णित किया है। तृतीय वर्ग में मज़दूरों के आर्थिक शोषण पर चर्चा हुई है। चतुर्थ वर्ग में पात्रों के आर्थिक संघर्षों के बावजूद भी जीवनयापन न कर पाने की सच्चाई को अंकित किया गया है। पंचम वर्ग में उपन्यास के पात्रों की दिन-प्रतिदिन बढ़ती व्यवसायिक मनोवृति को दिखाया है। अंतिम तथा छठे वर्ग में उपन्यास में गिरते मूल्य अर्थात चोरी, डकैती और लूट का वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय में **'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का राजनीतिक पक्ष'** रखा गया है। इस अध्याय को भी पांच वर्गों में विभाजित किया है। प्रथम वर्ग में पुलिस प्रशासन के क्रर व्यवहार को दर्शाया है। आज न्याय के स्थान पर शारीरिक शोषण हो रहा है। दूसरे वर्ग में चिकित्सा क्षेत्र में हो रहे भ्रष्टाचार को व्यक्त किया गया है। तीसरे वर्ग में चुनाव के समय किए जाने वाली राजनीति को दिखाया है। जिसमें व्यक्ति की अपेक्षा पैसे के प्रभुत्व पर प्रकाश डाला है। चतुर्थ तथा पंचम वर्ग में धोखे तथा बेरोज़गारी का वर्णन किया गया है।

षष्ठम अध्याय में **'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का सांस्कृतिक एवं धार्मिक पक्ष'** को वर्णित किया गया है। धार्मिक मूल्य बोध के अंतर्गत तीन वर्ग विभाजित किए हैं। प्रथम वर्ग में पात्रों की धार्मिक आस्था एवं विश्वास को दिखाया है। दूसरे वर्ग में पात्रों के द्वारा सास-ससुर तथा परिवार की सेवा करना अपना धर्म माना है। तीसरे वर्ग में धर्म में अंधविश्वासों का भी जिक्र मिलता है। सांस्कृतिक मूल्य बोध में उपन्यासों में लोकगीतों से वहां की संस्कृति को दिखाया गया है। इसे भी दो वर्गों में विभाजित किया है। दूसरे वर्ग में वर्णित परंपरागत सांस्कृतिक मूल्य को रखा गया है। जिसमें पात्रों के रहन- सहन, विवाह, पहनावे आदि तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है।

सप्तम् अध्याय में **'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में भाषा शैली'** को रखा गया है। लेखिका के उपन्यासों में बुंदेलखंड तथा ब्रज क्षेत्रों के प्रभाव को अधिकतर देखा गया है। जिसमें विविध शब्दों तथा शैलियों का प्रयोग किया गया है। आखिरकार उपसंहार में समग्र शोध प्रबंध का समाकंलन प्रस्तुत किया गया है। तदुपरांत आधार ग्रंथों तथा सहायक ग्रंथों की सूची को सलंग्न किया गया है।

उपसंहार

मूल्य व्यक्ति की रक्षा के लिए मानदंड होते हैं । मूल्य व्यक्ति को समाज के नियमों के बारे में जागरूक करते हैं । समाज में रहकर व्यक्ति परस्पर प्रेम-भावना , आचार-व्यवहार जैसे मूल्यों का प्रयोग करता है। मूल्य व्यक्ति को मानवीय जीवन का आधार प्रदान करते हैं। मूल्यों का आदर्शो के साथ निकट का संबंध है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में मूल्य बोध के अंतर्गत मूल्य विकास तथा विघटन का वर्णन किया गया है। साहित्य जीवन मूल्यों की उपलब्धि का सशक्त आधार हैं। सामाजिक मूल्य में बनते, बिगड़ते दांपत्य संबंधों को दिखाया है। कुछ पात्र अपनी इच्छाओं को मारकर सामाजिक हित के लिए भी कार्य करते हैं। उपन्यास में विघटित होते पारिवारिक मूल्य में अपने, अपनों का साथ छोड़ देते हैं तथा प्रेम के कारण पड़ोसी सहायता करते दिखाई देते हैं। लेखिका ने समाज में मूल्यों के बदलते स्वरूप को दिखाया है। उपन्यास में नारी गुलामी को स्वीकार नहीं करती है। आधुनिक नारी के आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के कारण उसके विचारों और मूल्यों में भी परिवर्तन आया है। आर्थिक पक्ष में नारी आत्मनिर्भर है। आत्मनिर्भरता के कारण उपन्यास की नारी पात्र समाज में प्रशंसा पाते दिखाई दी है। आत्मनिर्भर नारी किसी दूसरे के दबाव को सहन नहीं करती है । पात्र इतना अर्थ केंद्रित हो गया है कि वह अपने सामाजिक संबंधों को भूल गया है। उपन्यास में पात्र अपने रिश्तो को पैसे के बल पर भूलते दिखाया है। एक भाई, दूसरे भाई के हिस्से की जमीन के लिए मौत के घाट उतार देता है। इस तरह उपन्यास में आर्थिक तथा सामाजिक मूल्य विघटित होते हैं। लेखिका ने अपने उपन्यासों के पात्रों के माध्यम से वर्तमान समय में हो रहे आर्थिक शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई है। मज़दूरों को अपनी आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए भी धन नहीं मिलता है। पूंजीपति वर्ग की मानसिकता व्यवसायिक बन गई है। यह निम्न वर्ग को कुचलने में लगा है। अर्थ की अंधी दौड़ ने मानवीय मूल्यों का क्षरण किया है। साथ ही पद लोलुपता तथा स्वार्थ के कारण भ्रष्टाचार जैसे दुष्कर रूप राजनीति के सामने आए हैं। पढ़-लिख कर पात्र नौकरी

के लिए भी पैसे लगाता दिखाया है। जिससे बेरोजगारी जैसे तत्व सामने आए हैं। पात्रों में धार्मिक मूल्यों को विकसित करने की लालसा है। पात्रों में अपने भगवान पर पूर्ण विश्वास है, वह अपने जीवन का प्रत्येक कार्य प्रभु के नाम से ही आरंभ करते हैं। सास-ससुर की सेवा को बहु अपना धर्म मानती है। लोग परंपरा से निभाते आए टोने-टोटके में भी विश्वास करते हैं। उनके अनुसार ऐसा करना अपने धार्मिक मूल्यों को विकसित करना है। अपनी संस्कृति के प्रसार के लिए लोक-गीत गाते हैं। लोगों के पहनावे, उत्सव से उनकी संस्कृति का परिचय मिलता है। लेखिका के उपन्यासों में संस्कृति का वर्णन करने का उद्देश्य अपनी परंपरागत संस्कृति को सर्वोत्तम बनाना है ताकि भारतीय लोग अपनी संस्कृति से जुड़े रह सके। इस तरह उपन्यासों में मूल्य विकास तथा विघटन दोनों ही रूप देखने को मिलते हैं। वर्तमान समय में भी ऐसा ही दृश्य देखने को मिलता है कि कुछ लोग अपने संस्कारों का पालन करके मूल्य विकास को बढ़ावा देते हैं तथा कुछ अपने समाज के बाहर जाकर परिस्थितियों के अनुसार स्वयं भी परिवर्तित हो जाते हैं। जिस कारण मूल्य विघटन के दृश्य दिखाई देते हैं।

शोध प्रबंध का उद्देश्य :-

मेरे शोध विषय का उद्देश्य मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य के माध्यम से समाज में मूल्य के प्रचार प्रसार के साथ विघटित हो रहे मूल्य के पीछे छिपे कारणों का अध्ययन करना है। मानव समाज में एकता स्थापित करने के लिए मूल्य आवश्यक हैं लेकिन आधुनिक समाज में त्याग के स्थान पर स्वार्थ बढ़ता जा रहा है। मानव संबंध अर्थाश्रित होते जा रहे हैं। लोगों में एक-दूसरे के प्रति प्रेम, समर्पण, विश्वास की कमी होती जा रही है। सभी अपने-अपने स्वार्थ को पूरा करने में लगे हैं। उपन्यास साहित्य में भाई-बहन, पति-पत्नी तथा अन्य रिश्तों में मूल्य गिरते देखे गए हैं। भाई अपने फ़र्ज़ को न निभाकर धन कमाने के माध्यम से रिश्तों को नजरांदाज करता देखा जा सकता है। इसी तरह उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध के अंतर्गत मूल्य प्रचार तथा मूल्य विघटन को वर्णित किया है। लोगों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक पक्षों को उपन्यास के माध्यम से दिखाया है।

शोध प्रबंध में प्रयोग की गई शोध प्रविधि :-

प्रस्तुत शोध प्रबंध में वर्णनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। लेखिका के उपन्यास

साहित्य को पढ़कर मूल्य बोध विषय को विस्तार दिया है। विवेच्य शोध प्रबंध में विषय या समस्या के संबंध में वास्तविक तथ्यों को एकत्रित करके उसके आधार पर वर्णन किया गया है। कथा को सम्मुख रखकर मूल्य विकास तथा मूल्य विघटन तथ्यों को विस्तारपूर्वक वर्णित किया है।

पुस्तकालय एवं शोध संस्थान :-

1. पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला की भाई कान्ह सिंह नाभा पुस्तकालय
2. पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ ए. सी. जोशी पुस्तकालय
3. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बडौदा हंसा मेहता पुस्तकालय

शोध प्रबंध की स्थापनाएं :-

1.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य के पात्र वैयक्तिक मूल्य के द्वारा समाज में बदलाव लाना चाहते हैं । वैयक्तिक मूल्य में सामाजिक हित को सम्मुख रखा गया है ।

2. मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में विघटित तथा प्रसारित होते दांपत्यगत तथा पारिवारिक मूल्यों को चित्रित किया है । ऐसा नहीं है कि मूल्य टूट ही रहे हैं , टूटने के साथ विकसित भी होते देखे गए हैं।

3. मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में परंपरागत मूल्यों का पालन किया गया है।

4.नारी जीवन से संबंधित नई मान्यताएं साहस ,चेतना के दर्शन होते हैं।

5. अर्थ से आत्मनिर्भर नारी के सम्मान का चित्रण हुआ है।

6 . मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित उच्च जातियों, पूंजीपति एवं उच्च वर्ग से , निम्न वर्ग आतंकित एवं शोषित है ।

7.उपन्यास के पात्रों को अपने क्षेत्र से प्रेम है । वह अपने अनगढता , सीधापन छोड़ना नहीं चाहते।

8. मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में सरकारी कार्यालयों में आसीन व्यक्ति के भ्रष्ट व्यवहार का वर्णन हुआ है । राजनेताओं की मान्यता को भी दिखाया है ।

9.उपन्यास के पात्रों की भगवान पर अटूट आस्था को चित्रित किया है।

10.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में बड़े बुजुर्गों का आदर, मान- मर्यादा , परोपकार , सहृदयता जैसे आदर्श मूल्यों का समर्थन किया है ।

11.लोकगीतों के प्रयोग द्वारा सांस्कृतिक मूल्य बोध करवाया है ।

12.मैत्रेयी पुष्पा के समग्र उपन्यास साहित्य में लोकोक्तियां तथा मुहावरों आदि का प्रयोग हुआ है।

13.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्थानीय बोली एवं आंचलिक भाषा का प्रयोग प्रसंगानुरूप है।

शोध कार्य की नई दिशाएं:- शोध कार्य की अपनी सीमाएं हैं। शोध कार्य के बाद जो नए विषय सामने आए हैं उस पर स्वतंत्र रूप से शोध कार्य किया जा सकता है। मैत्रेयी पुष्पा के समग्र साहित्य पर स्वतंत्र रूप से निम्नलिखित विषयों पर अनुसंधान किया जा सकता है:-

1.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में सामाजिकता

2.मैत्रेयी पुष्पा के आंचलिक उपन्यासों में चित्रित लोगों का जीवन तथा संस्कृति

3.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन

4.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य का अनुशीलन।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रंथ :-

1. बेतवा बहती रही , किताबघर प्रकाशन : नई दिल्ली, 2018

2.इदन्नमम ,राजकमल प्रकाशन :नई दिल्ली ,2016

3.चाक , राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली , 2016

4.झूलानट , राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली , 2012

5.अल्माकबूतरी , राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली , 2016

6.अगनपाखी , वाणी प्रकाशन : नई दिल्ली , 2014

7.विज़न , वाणी प्रकाशन : नई दिल्ली , 2008

8.कहीं ईसुरी फाग , राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली, 2018

9.त्रियाहट , किताबघर प्रकाशन : नई दिल्ली , 2011

10..गुनाह बेगुनाह राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली 2014

11.फ़रिश्ते निकले , राजकमल प्रकाशन :नई दिल्ली ,2016

सहायक ग्रंथ :-

1. खान वसीम अहमद , सामान्य मनोविज्ञान , डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस : नई दिल्ली ,2010

2.त्रिपाठी शशिकला , उत्तरशती के उपन्यासों में स्त्री , विश्वविद्यालय प्रकाशन : वाराणसी , 2017

3.जलील अब्दुल , समकालीन हिंदी उपन्यास समय और संवेदना , वाणी प्रकाशन : नई दिल्ली , 2006

4. पुष्पा मैत्रेयी ,गुड़िया भीतर गुड़िया , राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली , 2008

5.पुष्पा मैत्रेयी , कस्तूरी कुंडल बसै , राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली , 2002

6. पुष्पा मैत्रेयी , चर्चा हमारा , सामयिक प्रकाशन : नई दिल्ली ,2011

7. पुष्पा मैत्रेयी , सुनो मालिक सुनो , वाणी प्रकाशन : नई दिल्ली ,2006

8.पुष्पा मैत्रेयी , खुली खिड़कियां , सामयिक प्रकाशन : नई दिल्ली , 2005

10.सिहंल बैजनाथ , नयी कविता : मूल्य मीमांसा , मंथन पब्लिकेशन :रोहतक , 1981

11.देवराज , संस्कृति का दार्शनिक विवेचन , हिंदी समिति : उत्तर प्रदेश , 1972

12.पांडे गोविंदचंद्र , मूल्य में मीमांसा ,राका प्रकाशन : इलाहाबाद , 2005

13.राजपाल हुकमचंद , समकालीन कविता में मानव मूल्य , शारदा प्रकाशन : दिल्ली , 1993

14.पानेरी हेमेंद्र कुमार , स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास मूल्य संक्रमण , संधी प्रकाशन : जयपुर , 1974

15.भारती धर्मवीर , मानव मूल्य और साहित्य, मंत्री प्रकाशन : वाराणसी , 1968

16.रजनी कु. , निर्मल वर्मा के उपन्यास साहित्य : मूल्यपरक अध्ययन , आकाश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स : दिल्ली , 2014

17.देशमुख रमेश , आठवें दशक की हिंदी कहानी में जीवन मूल्य , विद्या प्रकाशन :मेरठ , 1991

18.सारस्वत ओमप्रकाश , बदलते मूल्य और आधुनिक हिंदी नाटक , मंथन पब्लिकेशन : रोहतक , 1983

19.नगेंद्र , भारतीय सौंदर्यशास्त्र की भूमिका , नेशनल पब्लिशिंग हाउस: दिल्ली , 1974

20.लवानिया रमेशचंद्र , हिंदी कहानी में जीवन मूल्य , अमित प्रकाशन : गाजियाबाद , 1973

21.गुप्ता कमलेश , कविता और मूल्य संक्रमण , प्रकाशन संस्थान : नई दिल्ली , 1985

22.मेघ रमेश कुंतल , सौंदर्यमूल्य और मूल्यांकन , गुरु नानक यूनिवर्सिटी : अमृतसर , 1975

23.शर्मा मोहिनी , हिंदी उपन्यास और जीवन मूल्य , साहित्यगार प्रकाशन : जयपुर , 1986

24.गुप्त जगदीश , नयी कविता : स्वरूप और समस्याएं , भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन :दिल्ली, 1971

25'गुंजन' शर्मा गिरिराज , हिंदी नाटक : मूल्य संक्रमण , संधी प्रकाशन : जयपुर , 1978

26.बणकर धीरजभाई , कमलेश्वर की कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थ , ज्ञान प्रकाशन: कानपुर , 2010

27.किशोर नवल , मानववाद और साहित्य , राधाकृष्ण प्रकाशन : दिल्ली , 2003

28.सेठी हरीश , जीवन मूल्य और विमर्श , संजय प्रकाशन : नई दिल्ली , 2008

29.भट्ट गौरीशंकर ,भारत में समाजशास्त्र प्रजाति और संस्कृति , साहित्य भवन लिमिटेड: इलाहाबाद , 1952

30.गुप्ता ममता , धर्मगाथा और जातीय संघर्ष , राधारानी प्रकाशन: दिल्ली , 1998

31.' पथिक ' शर्मा देवराज , हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा : एक समग्र अनुशीलन , इंद्रप्रस्थ प्रकाशन : दिल्ली , 1980

32.तिवारी रामजी , हिंदी समीक्षा में काव्य मूल , अतुल प्रकाशन : कानपुर , 1986

33.सिहं शंभूनाथ , व्यक्ति और सृष्टा , लोकभारती प्रकाशन: इलाहाबाद , 1968

34.कुमार आनंद , समाजशास्त्र की प्राथमिक अवधारणाएं , विवेक प्रकाशन : दिल्ली , 1990

35.शर्मा सुकेश , भारतीय संस्कृति में मानव मूल्य और लोक कल्याण , सजंय प्रकाशन: नई दिल्ली , 2008

36.शर्मा वासुदेव , हिंदी कहानी में मूल्यों की तलाश , सहयोग प्रकाशन : दिल्ली , 1990

37. भारद्वाज राहुल , नवे दशक की हिंदी कहानी में मूल्य विघटन , जवाहर पुस्तकालय: मथुरा , 1999

38.कौशिक हेमराज , अमृतलाल नागर के उपन्यास नए मूल्यों की तलाश , प्रकाशन संस्थान : नई दिल्ली , 1984

39.सरावगी अलका , जानकीदास , राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली , 2015

40.शर्मा नासिरा , अक्षयवट , भारतीय ज्ञानपीठ : नई दिल्ली , 2003

41.शर्मा नासिरा , ठीकरी की मंगनी , किताबघर प्रकाशन : नई दिल्ली , 2019

42.तोमर रामबिहारी सिहं , समाजशास्त्र की रूपरेखा , पोरवाल प्रिंटिंग प्रेस : आगरा , 1970

43. सागर शैलेंद्र , ब्रंच तथा अन्य कहानियां , किताबघर प्रकाशन: नई दिल्ली , 2014

44.सिहं शिवप्रसाद , वैश्वानर , वाणी प्रकाशन : नई दिल्ली , 2004

45.जावड़ेकर आचार्य श.द., आधुनिक भारत ,कॉन्टिनेंटल पब्लिकेशन : अटलांटिक , 2000

46.उपाध्याय निलय , पहाड़ , राधाकृष्ण प्रकाशन : नई दिल्ली , 2015

47.बाबर सुरेश , भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन , अन्नपूर्णा प्रकाशन : कानपुर , 2001

48. साहनी भीष्म , कड़ियां , राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली , 2016

अंग्रेजी ग्रंथ सूची :-

1.W.M.Urban , Fundamental Of Ethics , George Allen and Unwin , London ,1930

2.Krober , Culture , Harvard University ,Combridge ,1952

3.Dr.Radhakamal Mukherjee , The Social Structures of Values , S.Chanel and Co. New Delhi ,1965.

शब्दकोश सूची :-

1. आप्टे शिवराम , संस्कृति हिंदी कोश , मोतीलाल बनारसीदास , दिल्ली , 1977

2.वर्मा धीरेंद्र, हिंदी साहित्य कोश परिभाषिक शब्दावली , ज्ञानमंडल लिमिटेड , वाराणसी , 1985

3.वर्मा रामचंद्र , मानक हिंदी कोश , हिंदी साहित्य सम्मेलन , प्रयाग , 1966

विश्वकोश :-

1.इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका

पत्रिकाएं :-

1. यादव राजेंद्र, हंस, नई दिल्ली, अप्रैल 1998, अंक-18

2.यादव वीरेंद्र, हंस, नई दिल्ली, अगस्त 2002, अंक-15

3.सिंह विजय बहादुर, वसुधा, नई दिल्ली, जनवरी-मार्च 2007, अंक-12

4.दीक्षित सूर्य प्रसाद, हंस, नई दिल्ली, अप्रैल 1998, अंक-11

अन्य माध्यम :-

1. टेलीफोन के माध्यम से लेखिका से लेखिका से साक्षात्कार

2.shodhganga.inflibnet.ac.in